



स्वरिण गने सार्धं नमो ॥ ॥ यादौ उवाच ॥

प्रह्लाद नारद परासर पुंदरिक कासी वरिष
अक सोनष भिक्का का आतकु मी गदा अर्जुन
वसिस्थाः भिविषे न नाद्याः ने ताने नैर्म्म भागव
तानमामि ॥ १ ॥ लोमहर्षे न उवाच ॥ ॥ धर्मो

विवर्धति जुजु स्थिर कर्तिनेनः पाप प्रणासेतिः वि
कौदरः कर्तिनेनः सशुविन सेतिः धनं जय क
र्तिनेनः मां द्वि सुत क यतान व भवंति रोगा ॥ २ ॥

ब्रह्म उवाच ॥ ॥ जेमानवा विकतरान उवाच ॥ ॥

जलोद्यमद्यना सचराचरा धरा विषान कोत्या वि
षिल विसमुगतंः समुद्र धिता यन वारा हातये
समे सनुर भगवान् नै पु सितं ॥ ६ ॥ अर्जुन उवाच ॥ ॥

अर्चिते मवेत मनः तमवे यं वि भै पु भावित वि
सेता वनंः त्रिलोके विसार विचार का कारकः ह
रि प्रप नो स्थ गति माहातमीन ॥ १ ॥ नह कुल उ

वाच ॥ ॥ अदिगमन मदन हसकाल पासान
वै क्षः अदिच कुल विनु जायतः पद कित किमा
सः तम पिग वा ध्या य परा पर ग्यातः नारायन

सु रगुत सतत स्मरंतिः ध्यान न हते किल विष
वेतः नास्ते मातु प्रियो धर र सीन यिन पिबंति ॥ ३ ॥

उन्मु उवाच ॥ ॥ नारायन नाम नरो वरानां प्र
सिध वीर कथित वंति वा अनेक नम जित पा
प संवर्गः हर्षे सेष समाप्ति वल च ॥ ४ ॥

उत्तस्थिर उवाच ॥ मेघस्यामयित कोसे वासं
शावत सांग कोसु भो भासिता गी पुने रयेत पू
नरिकायता के विसुर वंदे सर्व लोक नाथ ॥ ५ ॥
शाभिमर्ष उच कस्मपुन नव निखायतः हि
स्थो द हि पु विसंगि कस्म ह विन थ मं गृह ग स ॥ १ ॥
दुपंति उवाच ॥ किं तेषु पद्मसूः मर्गसूः सनि
सर्पसूः नक्षत्रि साय म नूत्र वृ पित्र गृह गृह ग
समह वै दु प्र सा दार्ता व जिव ह ग्गा य व ला व
विचानि निव ॥ १२ ॥ सह उवाच ॥ य का पि
कस्म स क त पु नामः द सा सो म अव ह त ग वां
न ना स्म म भव स्म ह दिख के स व र ग ति न का ॥ ८ ॥
सह उवाच ॥ त स त्र रू व ना ह स वि स्म त्र दु
ना त्र सा पु नामः त्रे पु कू वं ति वी र्णा म पि न भा
न भा ॥ २ ॥ कं त उवाच ॥ सा क र्म ह ल दि स्तां
यां श्री श्री ज नि वृ त्त म हः त सा स ह पि क सः
ता जिव ह ग ति नु श्री दु र्म ॥ १० ॥ मां हि उवाच ॥
कस्म त ता कस्म म नु स म त्र ति ना हि सं सा न
र त्र ग दि स्त ॥ १५ ॥ सा ते कि उवाच ॥ अ वृ
म ह न वि स्म क स्म द म डः वृ ना ग्य वि द नं त स
व स वा स द व न भा स्म ते ॥ १६ ॥ उ ध उवाच ॥
वा स द वी पु त्र ज्ञा नि दे व न र वा स तः रु पि ता
ज्ञान वि ता यः कृ य ष नं ति दु र्म ति ॥ १७ ॥ ध उ मे
उवाच ॥ अ पा स मि प स य ना स न सि तः
दि वा च ना त्रः अ थ धि वा कृ त्र द स्म षां किं विं स
कृ त्ति क न त्र लां द सा सो म धि पु न न व ति नु म
क स्म पु ना म न पु न रु वा य ॥ १३ ॥ अ हि मा नि वा य ॥

ग्वविंदं ग्वविं। हं न मूना निः ग्वविंदं मूकं न क
त्मः ग्वविंदं ग्वविंदं न अं गुयानिः ग्वविंदं ग्ववि
दं न मां तं अ॥ १४ ॥ धिष्टुर्मे न उवाच ॥
शानामना रायन वा मुदवः ग्वविदः वयं दूथः
मकुलकुलः शकुलवानातः नरसिद्धविष्णु
माग्रा वा सुदव सज्जगता सीता सिगतमानसा
तथा दास सदा सोहं तवे तसो निजन्म ॥ २२ ॥ लि
खम उवाच ॥ ॥ विपप्रितक्षु कालपप्रिच्छिन्नक्षु
वं धृष्टग्राहि मां कपजा कुल सननं गतवु सला
॥ २२ ॥ डानाचा उवाच ॥ ॥ ऊऊः रुगास्यकु
धननदियितः त्रिलो कनाथ दनननं तं गता
विष्णु प्रियुजाग को धूपिदव सवप्रनकु ल्यं
तं मया तन दन स्तनैव ॥ १८ ॥ संजय उवाचः
स अग्रा विषना सिमाथिला सातिताः धीप्रवृ
व्याद्युदिष्टवतमान संकिता ना रायन सदा मा
ति विमूग्नी दुषं स्पृष्टि नारु वीरु ॥ १८ ॥ अग्रा
उवाच ॥ ॥ अहस्मिना रायनः दासदास सव
दासदासं अनिता ॥ १९ ॥ उगता न नानाः तत्माद
हं धनेत रास्मी ॥ २० ॥ विदुनय उवाच ॥ ॥ ता
नरसिद्धः नमन म सुत ॥ २५ ॥ क री उवाच ॥
नानै कदामिनः शानामिन चिंता ता न्यं स्तना
मी रता मिः शायता मि न रु ग्राव दिप्रयनं
वृजमादप्र नः शानिवा सपुत्र स्वाकु म द
हदा स्मी ॥ २६ ॥

खलिनशानेनैसायनमे ॥ ॥ पादोऽवाच ॥
 प्रह्लादनादपरासरपुन्दरिक्वासां वलिष
 लकलानपुक्ककाशातकुमांगदाफूर्जुनं वलि
 स्थभितेवेनवाद्याः यतानंप्रमं भागवतानमा
 मि ॥ १ ॥ लोमहर्षणउवाच ॥ ॥ धर्मविवर्धति
 नरस्थिरकर्तिनेनः पापपुरासेतिः विकेदरः
 कतिनेनः सनुवितसेतिः धनं नृपकृतिनेनः
 मां प्रिस्तुतकथतां नः सनुविसेतिः धनं नृपकृ
 तिनेनः मां प्रिस्तुतकथतां नवभवंति रोगा ॥ २
 वल्लभउवाच ॥ ॥ जेमानवाविकतरापरपरगमान
 नः नाराभनसुरगुतसततस्मरंतिः ध्यानेनहो
 किलविषयितः नास्तेमातुप्रियोधरसांनपिन
 पिवंति ॥ ३ ॥ इन्द्रउवाच ॥ ॥ नारायतनामं नरो
 वरानाप्रसिधयैरकथितव्यंतिव्यः अनेकजन्म
 जितपापसंचयः हर्षसेयं समाप्रिब्रलं च ॥ ४
 नरस्थिरउवाच ॥ ॥ मेघस्यामपितकोसेनासं
 श्रीवसां गंकोसुभोभासितागं पुनेययेतपुनरि
 कायतादेविस्तुरवन्दे सर्वलोकनाथ ॥ ५ ॥ शा
 मिमस्यनउवाच ॥ ॥ जलोद्यमघनासचराच
 नाधराविवानकोलापिलविसमुगतः समु
 दधितायनवाराहारयेसमेसभुरभगवानं
 प्रसितं ॥ ६ ॥ मूर्धनउवाच ॥ ॥ अविंतेतमनः न
 मवेयं विभुं प्रभावितविसोभावनः त्रिलोके
 विस्तारविचारकाकारकः हरियुगनोस्मग
 तिमाहातमनं ॥ ७ ॥ नरकलउवाच ॥ ॥ ज

दिगमनमदलसाकालपासानवंधः तदि
 चकुलविनुजायतेः यद्वकिमासगमपिग
 वाध्यायतचाः तनास्मममभवस्रहृदिस्थके
 सेवेतगतिनका ॥ ८ ॥ सहदेउवाच ॥ तस्यैत
 द्भवनाहसविस्मृतुनातज्ञसायुनामः तप्रकु
 वंतिताममपिनमानना ॥ ९ ॥ कृतउवाच ॥
 शोभेननिदिस्मांयोः शोभोनानिवृत्तौमहः
 तस्यैतस्रहृदिकसः तजिवरुगतिदुधातुम ॥ १० ॥
 मांदिउवाच ॥ कृष्णनाकृष्णमनुसमनति
 ताउचकृष्णयुनप्रवृत्तिस्थायातः तिस्थांदहिप्रविसं
 तिकृष्णहविजथमंरुतगस्य ॥ ११ ॥ दुयंतिउवा
 च ॥ किंतुयुयुक्थः मृग्ययुः सनिसर्ययुः नद्वि
 साचमनुतेकयिजग्रातुजागसमंतवंतुतवंतु
 प्रसादातः तजिवरुगतावचलावविद्यानिनिव ॥
 ॥ १२ ॥ सरुडाउवाच ॥ यकापिकृष्णसकतायु
 नामः दसासोमध्ववरतेनकुलः दसासोमध्विपु
 तप्रवृत्तिजन्मकृष्णयुनामनयूनतवाय ॥ १३ ॥
 त्रिमानिउवाच ॥ गवविंदं गवविंदं हनमुनात्रिः
 गवविंदं गवविंदं मूकंदसः गवविंदं गवविंदंः तथोपा
 यानिः गवविंदं गवविंदं नमातज्ञथा ॥ १४ ॥ द्विष्टदु
 र्मनउवाच ॥ श्यामनायायनवासुदेवः गववि
 दः वयंकथमकुदकृष्णः श्याकृष्णवानांतः तन
 सिद्धविस्मृमात्राहिसंसावहनगदिस्थं ॥ १५ ॥

सात कि उवाच ॥ ॥ अथ महर्षिः सिः कृत्स्न दाम्भुः
 युगागव विद नंत सर्व सवासु देव न मा स्मृत ॥ १६
 उवाच ॥ ॥ वासुदेवं पुत्रं ज्ञानि देव न रवासु
 तः त्रिषिता ज्ञान विता प्रः कृपय नंति दुर्मति ॥ १७
 उवाच ॥ ॥ अपास मिथ स मना स न सिताः
 दिवा च नागः अथ चिगच्छ न दक्षिणं किं चिसु क
 तै क न मया जना द न स्म न तु वदु ॥ १८ ॥ संजय
 उवाच ॥ ॥ अत्राग विष ना सि मा थिला सा रिताः
 धा प्रवृत्ता दृष्टि व ह मान सं कि ता ना नाय न
 सदा मा ग्री विमूग्ना दुषं सु वि ना रु वंदु ॥ १९ ॥
 अग्नि उवाच ॥ ॥ अरु स्मि ता नाय नः दा स दा स
 स च दा स दा स नं ति ता न गता न ना नाः तस्म
 द हं ध न त या स्मी ॥ २० ॥ विदु न य उवाच ॥ ॥ वा सु
 देव स ज ह गा सं ता सि गत मान साः तेषां दा स
 सदा सो हं रु वं ज स्मो नि ज न्म ॥ २१ ॥ त्रि स्व भ उवाच
 ॥ ॥ वि य यि ता वृ का न प पि च्छि न वः वं धू र्ग हि
 मा कृ प ज्ञा कृ त्स स न नं गा ग वृ स ला ॥ २२ ॥ अना
 या उवाच ॥ ॥ अजः ह ता स व कृ ध न न द यि तः त्रि
 या के ना थ ज ना द न न ग त ग रा वि षू पृ मि प्र ता
 गः ज्ञा ध र्मा देव श व सु ल न तु ल्य ॥ २३ ॥ कृत्वा
 उवाच ॥ ॥ म न ज न्म ह मि दंः म धू र्क ता रु प्र म यं
 अर्थ नु ज म द नु गृ ह य ष य व ल हि म हि त व मि
 ना न कः ह ता ह व सः ॥ २४ ॥ मि मां स म न ला काः ना
 र्थ ॥ २४ ॥ अ सा स्था म उवाच ॥ ॥ अ वि द क स व ज
 न द नः वा सु देव वि सा स वि स म धू स द नः वि

यः श्रापदमनाहं पूरयामः पूरयामः पूरयामः
नचूतानत्रसिधः नमनमसः ॥ २५ ॥ रौजवाच
नानेवदामिनः श्रानामिनविं तन्नान्यं स्तनमी
तन्नामिः श्रायतामिनरुग्गालदियचननः वृज
मादननः श्राश्रानिवासपूरवातुमदहदास्यं ॥

२६ ॥ धूतना उवाच ॥ नमानस्त्वकावनावाना
यः नाथनायनायः मिति विक्रमायसिंधवक्रसि
गदाधनायनमासुतस्मिष्वोदमा ॥ २७ ॥ श्रध
यउवाच ॥ लभं वमाताचपिताः लभं ववं लभं व
वं धूचसुयानाः लभं वविद्यादुविलंः लभं वममद
वदवी ॥ २८ ॥ दुपदाउवाच ॥ जज्ञ सायुगव वि
दमाधवानां कसवकस विष्णुषिकेसवास
धवनमासुत ॥ २९ ॥ जयद्विथवाच ॥ नन्यकुत्साय
वायः वृहन्ननंतस्कतयज्ञागिसनायज्ञागामवा
महं सननीगत ॥ ३० ॥ विक्रतीवच ॥ कत्सायवासुद
दवायः देवकिर्नंदनायः नन्दगेपकुमायायः गववि
दायनमानम्य ॥ ३१ ॥ सामदेतउवाच ॥ नन्यपत्र
मकत्सानंः नन्यसुतविस्तरावननंः वासुदवायस
तायः जधूनापगयंतम्य ॥ ३२ ॥ विनाहउवाच ॥ न
मवृहन्ननंदवायगउवाहलहिनायज्ञागिनायः
कुत्सायगवविदायनमानम्य ॥ ३३ ॥ सलेउवाच ॥
जगतस्मिष्वसंकासंयितवासासंमचेतं जतम
स्यांतिगेमविदं नतयाविदतहम ॥ ३४ ॥ वनरुद्र

नह नि ॥ ४३ ॥ तान द्वा उवाच ॥ ॥ लाल स्फुटा नयस
 स्फुटाः कृतस्फुटा यत्रा नयः नयामि दिवसं स्याम ह
 दयस्व ननादनं ॥ ४४ ॥ गमेत म उवाच ॥ ॥ गव काति
 दानं गृहं न ह कासिः मकन क पया ला गं ग म ह
 क लय वासिः न ह न गं म न स्ववर्न दानं ॥ ४५ ॥
 न गि न उवाच ॥ ॥ गव विन्दति सा दा स्नानं गव विन्दे
 तिसदा नयः गव विन्दति सदा ध्यानं सदा गव विन्दे
 ति कृतनः त्रिपुं कृतनं यत्र ब्रह्माः गव विन्दति त्रिपुं क
 रेः तस्मि दुर्चलित न न ब्रह्मा रजाय कन यत ॥ ४६ ॥
 शा वा दु ना नि न य उवाच ॥ ॥ नृकृत क लय व क
 सा न न त काम ध न वाः चिंता म नि स्तु गव विन्दे ह
 त्रिना म वि चिं त यत् ॥ ४७ ॥ ह नि हा उवाच ॥ ॥
 नय नु नय नु देव कि नं त नायः नय नु नय नु क
 स्म वि ब्रुवं स प्र दिय नय नु नय नु नय नु भ द्य स्या
 म काम नां गवः नय नु नय नु नय नु त्रि थि तान न
 ना स्व म कृ दं ॥ ४८ ॥ पि प ला नि न उवाच ॥ ॥ शुभं न
 ना सि द्य वि ह ग नृ क्षा य ता प्र उ क्षा म न म ना य
 त्वे क्षाय क स्नाय वि स्थि क र ला गि नि त रं ग ना
 ग क स व ज्ञा य ह न य ग नृ त्वा न म स्फु ते ॥ ४९ ॥
 ह नि हा उवाच ॥ ॥ कस्म ह दि य प द यं त्वं तं पिं नां
 ते नृ द्य व म व स नु मा न सं ना न हं संप्रा न पु न्ना नं
 स म य क वा ता पि नुं के वा ब न ध न वि धू स्म न नं कं
 त स्फु ते ॥ ५० ॥ वि दू न य उवाच ॥ ॥ ह न ना र्म व ना
 न व म स दि व दि व नं क ला व ना स्त व ना स्त व

गतिरने ॥ ५१ ॥ वसिष्ठ उवाच ॥ कथंति मे ग
लेनामज्ञस्य वाचिष्वर्क कृतः तः ह स्मिह वृत्ति
स्यासु माहायानक का म ॥ ५२ ॥ ऋद्ध उवा
च ॥ कस्माद्य वासु देवा य ह न य प्रमान् म न य
नेत क संना सा य. ग्व विद्या य न म न मा ॥ ५३ ॥
कस्य या उवाच ॥ कस्मान् समन न देव या य संघ
तः पं ज नं स त अ ह द मा यून ति गि नि व ज्ञो ह ता
न था ॥ ५४ ॥ दुर्द्ध न उवाच ॥ ज्ञा ना मि र्म नः
च म नि वृ त्त ना ना मि या पं न च म नि वृ त्तुः क
ना पि द व न ही र्द क्षि त न त थ मि र्ता स मि र्ता
क ना मि र्ता सः गु न दा य न क म ना म धू सं द नः
ऋ ह भ व म हं हं तु म म दा व न दि य त ॥ ५५ ॥ त
गु न उवाच ॥ ना र्भ व ग्व वि द्ना ना म न ता स ता
धि कं द दा ति वा त ना मू ग ति र वा न वं ज्ञो गा तं
५६ ॥ सोम स उवाच ॥ न मा मि ना ना य न यं र
ले क ना मि ना ना य न यू ज्ञ नः स दा व मि ना ना
य न ना म नि र्म ल से ना मि ना ना य त ना म व यं
५७ ॥ सीत क उवाच ॥ ऋ स्म त स क व ल्या नं ता
ज्ञ नं जे त्रु ज्ञा य दे यू र्वं म नं नि त यु ज्ञा मि स त नं
ह नि ॥ ५८ ॥ ग र्ग उवाच ॥ ना ना य ति ति म र्मु सि
वा ग सि व स व ग्ना नि ऋ स्म त थ पि न त क द्या य
प तं ति म हं ॥ ५९ ॥ दाल स उवाच ॥ किं न स
व र्ति मं तु र ग्ग ति न ज्ञ स ज्ञ ना द नं न मा
ना ना य न ति मं ग्री स वा ऋ यं सा ध के ॥ ६० ॥ वै द
सं पा य उवाच ॥ ज्ञ त्रु ज्ञा ग्व स त्रु ज्ञ त्रु यं ध न ध
न त्रु ग्वा वि ज्ञा त्रु ग्ग ति धू र्व नि ति म ति म ॥ ६१ ॥

अंगिन उवाच ॥ हृदि हतिया पानि दुस्खिंदु नयि
अनिच्छता उ संस्मृतं दहतं वहिया वक्तं ॥ ६२ ॥
पानास न उवाच ॥ सकवि दुर्व्रित्तं न ह विप्रि
नेह न द्वयं वर्जयतिः न कस्मिन् मया य गमनं व
ति ॥ ६३ ॥ पालस्फ उवाच ॥ हृदि वनससा न
गसवं दाम दुधू नयि प्रना नायन वपि रु गतं
विद्रि ह नि रंतं ॥ ६४ ॥ वास उवाच ॥ सते स
न पुन सते ह रु मथा य वा धन न व दायनं सां
गिन द व क व स व स यनं ॥ ६५ ॥ धनत न उवाच
अच कृत न ह ग व विह ना रु सा ल न रु यं व तातां
न संति सु क तां प्रा ग्म सते सते व दाम हं ॥ ६६ ॥
मान कं द उवाच ॥ साहा नि स्म म हि कं द सा वं
ध रु द मू ग र त मं रु न्म रु रु क नः वा प्रि य वा स द
व न यि त य र् ॥ ६७ ॥ अग स्फ उवाच ॥ नि मि वं
नि मि वं न ध वा प्रा नि नः वि कृ वि त नं रि थ को ति
स ह श्र नं ध्या न भ कं वि शि ष त ॥ ६८ ॥ मन सा क
न उवाच ॥ अ स्म रं ति रु ता द नं त रु त रु क रु क
प्र यु र्ता ग त्म मि वं ख न ॥ ६९ ॥ सत उवाच ॥ अभा
क सर्व सा रि नि वि चार्त व य न य नः ॥ ७० ॥ द म कं से
म स य नः ध्या त ना ना य नं स दा ॥ ७१ ॥ आ आ मा हा
द उवाच ॥ स वि प्र व क्षा न ह त व्या धि शु र्क क
न व न व य धः ता न वि त यं व द ना ना य नं ह नि

७१ ॥ सनक उवाच ॥ अतः तदा दम विता वृष्ट
 कनवंति विष्णुवाः आसी वि सं ह न द व सु र ग
 ता कि म् य इति य वं प्र ह्या द र्था द वं त्रि य प्र स्र वा
 य ध नं किं तु यं ति स्र नः ॥ अ हं द व नाना य नं विष्णु
 ७२ ॥ सनक उवाच ॥ अ स ह स ग दा च कु ग न
 ध्व ज स वा ह नंः सं य च कु ग दा य इ म स भ वि
 ष्ट पु सि द ताः ॥ अ दं य वि नु मा यि वे य न्य पा यं
 यं ना स नंः अ य स्था प्रा न् व षा य वि ष्णु ॥ ॥ ॥ अ ह
 सा वृ जेः जी वा मा ह न ये ध र्म अ र्थं का म मु क्त्वा नं
 पां दौ वै पा रि ति ता व ग्गा इ त्रे गो ॥ भ वि न ग र चो
 ज च तु ग्वा र सं पु न ज न्म ना भि ग्ग त ले ग इ ति श्री
 पां दौ वै वै कृ तः पां दौ गि ता स मा ह ॥ अ उ वा
 य अ उ वा म म दो षे न दि य ते ॥ ॥ अ ॥ ॥

श्री ग रो सा य न मः श्री स न स्व त न म ॥ ॥ ॐ
 श्री स न स्व ति त्मो ग म न्न स्य मा के रा डे य म वि
 श्री मु ध रा स कि र न्नु स्य प ह्नु यः श्री स र स्व ति दे
 व ताम मः वा क्री ध्या र्थे न ये वि नि यो ग ॥ वृ षो
 वा च ॥ रु क्ता म वृ ह्य वि वा न सा र य र मा मा ध्या
 न ग न्वा पि नि म वि ना यो स्व क क्ष रि मः म भ
 या द म ॥ अ ध्या न्ध क रा या हा रा मः ह स्ते का टि क
 सा रि का म ॥ वि द ध ति य म स रो स्थि ता म ॥ य र
 मे सो रि म भ ग व तिं वु डि प्र दा सा र द मः डी डी
 डी डी डी क वि ने स री त यि क म रे क ह्य वि

स्फुल्ल स्वभै भव्य भव्य नु कुलेषु मुदितं चंद्रे
चिस्ववम् ॥ द्याद्रिय देव द्यो य वि वे प्र नत न न
मनो मोद समपादयेत् पोत फल ज्ञान कुटेहा
रे निज देव देवि स न्यार सरे ॥ २ ॥ ऐं ऐं ऐं जाय
तुद्ये हिम तपि मु कुटे ल किं ग्रह सै मात मात
नमस्तेः दहः दह ज डताम् ॥ देह वृद्धि प्र साम
विदे विद्वान् गितै श्रुति य रिया वि ते मो क्क द मु
क्लि मार्ग मार्ग तित स्व भावे भव मम वर दाम
सार देः श्री भ्रहारे ॥ ३ ॥ धि धि धि धि धि र न्ये
ध ति म ति नु ति भि कि र्त्त नि ये नि ते नि ते न मि
ते ॥ मु नि ग राः मि शे नु त ने वै यु रा रो मु ने यु रा
ये यु वा दे ह रि हर न मि से युं री त ल्प गु व री न मा
त मा त्रा धित ल म ति म ति दे मा ध व प्र ति ना दे
४ ॥ लं लं लं लं स लि र येः दहः दहः दुरितं यु
स्वं वृ ग्रह सै संतु ष्टा कार वि लै स्मित ॥ मुखि
त्रु भा जे भ म भ नि स्थ भ रि ये मु धे मु धे य
वे ५ ॥ धे म म कु र कु म ति ध्वां स वि ध्वा स मि ध्वा ॥
५ ॥ गि र्गि र्गि र्वा म्भ र थि लं क वि र्वा स रो शि धि
सा द्वेः ॥ रौं रौं रौं श क्ति र ये क व ल भ व मु धा मः
भो ज मु तिं स र ये र या त यु का से श क ल गु रा
म प्र नि गु रौ नि विं कारेः न स्थ ले रौ व र्श के
य वि दित चि भ वे जा य वि ज्ञ न त लेः वि स्व स्वा
न रा रे स क गु रा म य शि क ले शि स श्रु दे ॥

सोमिस्वामि मम देवि मम कृतसनामा कदाचि
जेयथा ॥ मा भो कुद्वित्तद्वा भवतु मम मनोः
यत्तु मामदिद्ययायात् ॥ मामो दुषां कदचित्
विवरिसमये मास्ममं नाकुलत्वंः सस्त्रे वादे क
चित्प्रयुसरत्तु मम धिमास्म कएटा कदाचि
त ॥ ईह्येतै सो कमु यैयु तितितमुषसि सोत्त
सि येः भक्ति एम्यो ॥ वाग्मि वायस्य तित्यात्
वित वि भवो को तत्त्वर्थ वेत्ता स स्यादिष्टार्थला
भुभुतमिव सवतं पातु मां सा च देवि ॥ सो भ
ग्यंतस्य लोके युरस्य रति वा वित्त विद्य मत्संयु
यांति निर्विद्यं न तस्य विद्यां यु भवति सततं च
भुवग्रथ वेध किर्ति स्त्रे लोके मध्ये एव सति
वद ए सारदा हस्त्य सा कदात्ः दिद्यो युर्लो क
पुज्यं सकल गुण ए द्विसत्तं राजमान्योः वदे
व्यास म्यसादातः त्रिजगद्विज्जै जा प्रते सत्सभा
भुः ब्रह्म चात्रावृति मे एतन्मोद स्यां विराप्रयः सा
रस्वतजयातया ठात् सस्य द्रीष्टार्थला भवात्ः
वददये नयेद स्यां मे कर्विसति संवाया स्य विदि
नयठेद्ये सुसक वित्वं यठे ध्रुवं म ॥ सर्व पायवि
। ५ एतन्मुक्ते भुभलोको कवि श्रुते ॥ वाग्मि तं फल
मायो तिलोके स्मिन्नात्र संस्रः इति श्रीसन
कु रसहि यां ब्रह्म नो हि तं सरस्वतिः सोत्र
मुतं भुभ श्रीरामरमः इवै यदे कात्र ये दसिः
सरस्वति यतये जया सगणैः रात्रि मास्त्रावते

५२ भाग ३

रकार्डैः सः स क सै सितन वोलि पुजा गर्नुः ज
नः विद्याः कायेतः कविता सिद्धि होई ॥ ॥

शुखसि श्रीगणेशाय नमः श्रीपंचमुषि हनुमन्
त्रमं अंशुस्य श्रीहनुमन् कवयस्त्रमत्रस्य
श्रीरामचन्द्राभि श्रीहनुमान पंचमुषि देव
गा मुनुषु द्वाद माहता त्रज इति विजं नं न नि
सुगरी रानिल कुमन प्राणदाता इति विजम
मसकल काये सिद्धे र्थे त्रये विरि योग ॥
अथ न्यासः ॥ अं हूं अं गुं अं भा नम अं हूं
त ऊं निका भानम अं हूं म भो मा भानम
अं हूं अनामिका भानम अं हूं कनी वि का
भानम ॥ ॥ अं हूं करतल करपुष्पा भानम
अं अं नं नित सुतवे हृद या नम अं हूं हृद मूर्त
ये नम सिर सेखादाः अं वा मु सुता त्पने नमः
शिखाये वोषटा ॥ अं वज्र कवचाय नमः कवचा
य हूं ॥ अं राम दूताय नमः नेत्रे त्रे पाद वोषटा
॥ अं व ह्यारत्र निवारनायः अं त्स्त्रा य फद् ॥
इति दिग्बन्धनम् ॥ अथ ध्यानम् ॥ अं ध्याय
वाल करधुपति निर्भदे वारी दय्यो ग्रहं देवे
द्र प्रमुखं प्रसस्ताय थ शं देवी य मान रुचा
थु शिवादि स मत्त वा नर युतं सुमं कंत त्वं पि
यं सं रक्तं यलोचनं यवनं जं यीता मरा यलं
कतम् ॥ ॥ अं नमः पंचवदनाय पूर्व कवि मु

आदि वरा द्वाय ले ले ले ले ले सकल थ
मन्त्र करा य स्वाहा : ५ ॐ वञ्च सुषे पञ्च मु
विहनु मन्त्रे गि वा श्री रं रं रं रं सकल थ
यो न नमि निवाह कारणा प स्वाहा ५ ॐ
अर्क मूर्ते य पंच मुखि हनु मन्त्रे ठं ठं ठं ठं
सकल जंत्र मंत्र उवाठ नाय स्वाहा : ति
ल कंठ मूर्ते य पंच मुखि हनु मन्त्रे अं ज नि
सुता य वा यु पुत्राय महा वलय सिता सो
क नि वार नाय श्री राम चन्द्र याडुः का प्रिय प्र
महावीर्यो य प्रथमनाम प्रथमा एर किला य
कार्ये पंच मुखि विरहनु मन्त्रे नमः सकल भू
त येत यिथा चतुस्र श भ स या की निश किणि
अंतरि भः अह पर जंत्र पर तंत्र उवाठ नाय स
कल जंत्र निवाह कर नाय श्री पंच मुखि हनु
मन्त्रे वर प्रथादाय यं यं यं ये ये स्वाहा दं दं कं व
च पटिल नु महा स्तोत्र पुनः पठेत्ः एक वारं प
ठे स्तोत्रं सर्व शत्रु निवार नमः द्वि वारं य पठेत् स्तो
त्रं सत्वे स्य र्य विवर्द्धन मु ॥ तृ वा दं पठेत् रजो त्रं
सर्व सम्यक्त्तरं शुभम्ः चतु वारं पठेत् न तो त्रं स
सर्व रोग निवार नमः पञ्च वारं पठेत् न तो त्रं यं च ख
र्व मुखि वस्य र्व रं षष्ठ वार पठेत् स्तोत्रं सर्व लो क व
स्या भवतिः सप्त वारं पठेत् न मे व स व स्य भा ग्य
दायक मः अष्ट वारं पठेत् न तो त्रं मिष्टान का मा भ
सिद्धि द्दमः नव वारं पठेत् न वा त्रं त्र्यं भो ग्य पुदा

यत्कर्मः दसगारं पठेत्तत्तात्रैवेत्येकं ज्ञानदाय
 कर्मः स कादवाचार्यपठेत्ततोत्रं सर्वसिद्धि लभे
 त्तर ॥ कवचस्यारनेनैव भद्रावलसमान्वितं म
 हानान कवचेन जोषटिषितियुनः युनः म
 नसा चिंतं कार्यं सिद्धि भवति निश्चितं म ॥ ॥
 ह नि श्री मुदर्शन स हितायां श्री रामचन्द्र सि
 तामनो हलयंच मुषि हनुमत कवचस्य मां
 शुभंः स्तुति श्री साके २३ ॥ मंगल सत्र मुदि

३५

॥ स्तुति श्री गणेशाय नमः ॥ ॥ दसरे
 शुनि ये मे भरनिः त्रागन कृत्तिकाः बुद्धि
 रोहिनिः ससि मूर्ग सिला ॥ ५ ॥ रौद्रे श्रारद्रा
 ६ ॥ दित्येय नारवश्र ७ वायुयतिटिषेः यवे
 ८ सार्यय सलेसा ९ यिने मद्या १० भग
 फाल्गुनि ११ अश्विमे उरु फाल्गुनि १२
 करे हस्ता १३ कस्तुरि चित्रा १४ मातत सारि
 १५ उदैव विसायाः विश्वे १६ मैत्रा चं शुन
 राधा १७ साके सज्य १८ मिरित मुल
 १९ तो ज्वेयुर्व बाडा २० अः दुथ म् उउ
 त्र बाडा २१ ग्वविन्द सर वनः कर्नेर् २२
 वासवे धनेत्या २३ वरन्ये यं वु सद नि
 या २४ युर्व भाडा युभा २५ उत्र भाडा
 २६ युष यौसे रेवति २७ इति गु पुन द्दत्र
 २८ ॥ ॥ श्री साके १७ ३७ श्री ने पाल सस

३६

रिवयं यमुषिहनुमन्ने सकलशत्रुसंहारणाय
महावलाय स्वाहा ॥ ॐ नमः पंचवदनाय
प्रदक्षिणाय मुखनारसिंहायः सकलभूत
येतदस्तेनायहं साहा ॥ ॐ नमः पंचवदनाय
पश्चिमुमुखगण्डायाः सकलविषहराय
स्वाहा ॥ ॐ नमः पंचवदनाय उत्तरमुख्याः
दिवराहायः ॥ सकलशम्यकरास्वहा ॥ ॐ
नमः पंचवदनाय ऊर्ध्वमुखहराय मित्राय
सकलजनवत्स्यकराय स्वाहा ॥ ॐ नमः पंचव
दनाय भगवते श्रीरामद्वनायः शृंगनिपुत्राय
वामुसुताय महावलायः ॥ क्षसिताक्षरनिवा
रणाय लीलायुरीदहनकराय महातेजो
यराजेशाय फाल्गुनाय स्वायः सकलवृत्ता
किलायः हनत्करायः विश्वरूपाय सप्तसमु
द्रनितरायः लेखिनाय विंगलायः श्रुमि
तविक्रमाय सूर्याय धिषफलशैवनाय सं
वृद्धवृत्तिवारनाय शृंगलक्ष्मणमहाकपी
सैन्याणाय प्रदाय ॥ कार्यवशकारविधुं
सनाय ॥ रामेश्वफालुनमहासंखाय ॥ शि
तासहित श्रीरामचन्द्रवराय प्रदायः कार्यवर
प्रयोगनिवारनायः स्वष्टप्रयोगाय गमये
यमुषिहनुमन्तकवचध्यात्वा युयागः कुर्या
नु ॥ ॥ ॐ हरिमरकटमरकटाय ववं वं वं
फट स्वाहा ॥ ॐ हरिमरकटमरकटाय फं

कं कं कं कं कं कं इत्याहाः ॐ हरि मर कट मर
 कटा य हं हं हं हं हं हं आ कर व ना य। से व स
 म्प ति क ला य सा हा। ॐ हरि मर कट मर क
 टा य खें खें खें खें मर ना य सा हा ॐ हरि मर
 कट मर कटा य टं टं टं टं टं टं खं भ ना य सा हा
 ॐ हरि मर कट मर कटा य उं उं उं उं उं उं स क
 ल ज न खं व क रा य सा हाः॥ ॐ हरि मर कट
 मर कटा य लुं लुं लुं लुं लुं लुं उ चा ट ना य सा हा॥
 ॐ हरि मर कट मर कटा य उ ई मुख ह रा य
 मि वा य तं तं तं तं तं तं तं रु द मू नौ य स क ल प र्ण
 ज न नि वा ह क र णा य व च मु षि ह नु म ने व
 ज न व तं व उ चा ट ना य सा हा॥ ॐ कं खं गं घं
 उं दं जं उं जं उं टं ठं उं टं रं गं थं दं धं नं यं कं खं
 भं मं यं रं लं वं सं सं सं हं यं दं वं रं॥ इति दि
 ग्वे ध न मुः। ॐ यु वं क यि सु रि व पंच मु खी
 र वी द र्मे नु म ने ठं ठं ठं ठं ठं स क ल य
 व संहार णा य सा हाः॥ ॐ द कि णा मु खे
 पंच मु षी ह नु म ने काल ल सि हा ग हां हं
 द्रां द्रां द्रां स क ल धू त प्रे त म र्द ना य सा हा
 ॐ प त्रि म मु खे पंच मु षि ह नु म दो ग रा
 ड य सं सं सं सं सं सं स क ल वि ष ह र ना य सा
 हा॥ ॐ उ त्र र स खे पंच मु र वी ह मू नु म ने

व्रतेश्रीरामहं हनामः श्रंजनिप्रवासासु
 तासुमहावल्लभः सिताङ्गनिवारणायः लंका
 पुरादहनकरासुः महातेजप्रकाशप्रकाश
 वासुधायः सकलब्रह्माण्डकिलायः हनत्क
 रायः विश्वरूपायसप्तमुद्रनितलायः लंछिना
 ययितलायः श्रुमितविक्रमायसूर्योयविव
 फलशेवनायः सबद्धनिवारनायश्रुगल
 दमनमहाकवीसौन्यप्राणप्रदाय ॥ कार्य
 दशकण्ठविधुसवाताय ॥ रामेषकाल
 नमहासंखाय ॥ सितासहितश्रीरामचन्द्र
 वरप्रदायः कार्यपरप्रयोगनिवारनायः
 खरध्रुवयोगश्यामयंसमुखिहनुमन्कव
 चप्राप्त्ययोगः कुर्यान् ॥ ॥ ॐ हरिमरकट
 मरकटाय वं वं वं वं वं फट् स्वाहा ॥ ॐ हरिम
 रकटमरकटाय कं कं कं कं कं फट् स्वाहाः ॐ
 हरिमरकटमरकटाय हं हं हं हं हं हं आकरव
 नायः सेवसम्पत्तिकराय स्वाहाः ॥ ॐ हरिम
 रकटमरकटमैठाय बे बे बे बे बे बे मारनाय स्वा
 हा ॐ हरिमरकटमरकटाय टं टं टं टं टं टं
 नाय स्वाहा ॥ ॐ हरिमरकटमरकटाय उं उं
 उं उं उं सतजनस्थं वकशप्रसाहाः ॐ हरि
 मरकटमरकटाय लुं लुं लुं लुं लुं लुं उड्डनाय
 स्वाहा ॥ ॐ हरिमरकटमरकटाय उड्डं मुख
 हसप्रतिवाय तूं तूं तूं तूं तूं तूं तूं द्रमूर्तीप्रस

कलययेन न निवाह करणाय पंचमुखि हनु
मन्त्रे यत्र तै यतंत्र उच्चाटनाय साहा ॥ ॐ कं वं वं
घं उं चं दं जं ङं तं ठं डं णं तं थं दं धं नं यं कं वं
भं मं यं लं रं वं स्रं रं स्रं हं यं हं वं तं ॥ इति दिग्विष
नमुः ॥ ॐ पूर्व कपि सुखि पंचमुखी हनु मन्त्रे ठं
ठं ठं ठं सकल यत्तु मंहारणाय साहाः ॥ ॐ दक्ष
हिणामुषे पंचमुखी हनु मन्त्रे काल न सिहाय
क्रां क्रो क्रौ क्रूं सकल भूत येत मर्दनाय साहा
ॐ वशिष्ठ ॥ ॐ शिवममुषे पंचमुखि हनु मन्त्रे गरुडा
य सं सं सं सं सं सकल विष हर नाय साहा ॥ ॐ
उत्तरमुखे पंचमुखि हनु मन्त्रे आदिव राहाय लं
लं लं लं लं सकल सन्य त्कराय साहा ॥ ४ ॐ उ
द्दमुखे पंचमुखि हनु मन्त्रे शिवायारं रं रं रं स
कलययेन न निवाह काहणाय साहा ॥ ॐ सु
र्क मुर्तययं च मुखि हनु मन्त्रे ठं ठं ठं ठं ठं सकल
जंतु मंत्र उच्चाटनाय साहाः निलकंठ मुर्तययं
पंचमुखि हनु मन्त्रे अज निसुताय वायु पुत्राय
महाबलाय सित सो क निवार नाय श्री राम चन्द्र
पादुः कायि पायुः महावीर्यो ययुथ मनाय युत्ता
एत किलाय कार्यं पंचमुखि विरिहनु मन्त्रे नमः
सकल भूत येत पिशाच वृक्ष राक्षसः धाकी
निष्किणि श्रुतरिभः ग्रह यरजत वरतं तं
उच्चाटनाय सकल जंतु न निवाह कर नाय श्री
पंचमुखि हनु मन्त्रे वरयथादाय यं यं यं यं यं

ॐ नमः श्रीगणेशाय नमः ॥ मधार्कं वा रे हस्मिनि वि
 हाषाः नारो द्रवरो भव वृक्ष वस्ममलः ॥ १ ॥ गुरो वकु
 तिका रोहिनी च शुक्रैः सनौ च हस्ता उम धं टा गा
 ॥ १ ॥ आदित हस्ता गुरो पुष्ये जा गः वृक्ष नुराधाः
 अनिताहिनी चः सोम पृश्ताति रुद्र नवा विव रोमा
 अस्तनिनाः अमृत सिद्धि योगा ॥ २ ॥ पूर्व सुक्र आग्ने
 श्वंद्रः रोमस वृद्धि नस्तथा यदाः राहु न वं रत कान
 अनिश्वपासिमः सुतथा कुश्ववाय वेकानः ॥ ३ ॥ गुरो
 उत्तदि सयोः ०० ॥ न सोम यश्व वम हस्त यै सुथो
 वच ॥ १ ॥ शुक्रै व पुष्यी ता कदे वंद्रमादिर कदे यो
 भौम वं कट कदे से राहु पाषाण न न मे वच सनिश्व ग
 गुरो भौमो केतु श्व वहु कदे योः गुरो अमृत कदेः
 से वुधे वफल भवे यो ॥ १ ॥ आदित कानि शुभ लाम जुता
 भौम श्व मत्स्य वुध शुक्र सौम्यः ॥ १ ॥ गुरो वीसा द्वि सानि सर्वना
 सो राहु व केतु मर नानि नृत्ता ॥ ३ ॥ टिषा काना रो ता
 भौम जै दि उसा तिमः टा को डे डे भौमि उस्प्र थार मा स तिम
 जा तिमि दि उसा वंदा भौम जै ता तिम सानि वसा ई व द्रे मे द्रा क
 ह से ति भौम जै पादित का रिर ह ॥ १ ॥

नु स्व रसी ता ता गो शय नम ॥ श्री पंच मुषि हनु
 मन्नय नम ॐ अस्य श्री हनु मन्न क वच सो
 त्र मंत्र स्यः श्री शम च नृज पि श्री हनु मान यं
 च मुषि देवता अनु युद्धः मा रता त्प ज इ ति
 वि जं अं जनि सुत री शक्तिः लकु मन प्राण दा

नादतिवीजंममसकलकार्यसिद्धयेत्रयेवि
णियोग॥ अथन्यासः॥ ॐ द्रो अक्षुष्या भ्यान
म ॐ द्वा तर्जनीका भ्यानम ॐ कुं मध्येमा भ्या
नम ॐ द्वै अनामिका भ्यानम ॐ द्वौ कनिष्ठिका
भ्यानम ॐ द्रुं कर्तारतयष्टा भ्यानम ॐ सं जनि
भुतवेह दयायनम ॐ रुद्रमूर्तयेनम शिरसे
स्वाहाः ॐ वायुसुतात्मनेनमः शिरवायैवैष
ट॥ ॐ वज्रकववायनम कवचाय हुंः ॐ राम
दूतायनमनेत्रत्रेयायवैषट्॥ ॐ ब्रह्मास्त्रनि
निवारनायः अस्त्राय फट्॥ इति दिग्वंधनम् ॥
अथ ध्यानम्॥ ॐ ध्यायद्वालकरपुपतिनिभैर्दे
वारीदर्याय हुं देवेन्द्रयमुखं यस्मा यशश
देवीयमानरुचाः शुश्रिवादिममस्तवानरयुतं
सुमन्तं तत्त्वं प्रियं संरक्तं यलेवनं यवनजं पाताम्
रायलंकनम्॥ ॐ नमः पंचवदनाय पूर्वकपि
मुखिहनुमते सकलशत्रुसंहारणाय महाव
लाय स्वाहाः॥ ॐ नमः पंचवदनाय दक्षिणाय
मुखनरसिंहायः सकलभूतयेतदर्शनाय
स्वाहा॥ ॐ नमः पंचवदनाय पश्चिममुखग
हदायः सकलविषहराय स्वाहा॥ ॐ नमः पंच
वदनाय उत्तरमुखयादिवराहायः॥ सकलश
म्यत्कराय स्वाहा॥ ॐ नमः ॐ नमः पंचवदना
य उर्ध्वमुखहराय शिवाय सकलजनवस्य
कराय स्वाहाः॥ ॐ नमः पंचवदनाय भग

साहा इदं कवचं पठित्वा नमो हासो वंदु नः
यथेतः रंज वार यथेतोत्र सर्वशत्रु निवारनमः
द्विवारं यथेतोत्र सर्वस्यैव विवर्द्धनम् । त्व
दयथेतोत्र सर्वस्यैव त्वरं शुभम् । चतुर्व
रं यथेतोत्र सर्वशत्रु निवारनम् ॥ पंच वा
रयथेतोत्र पंचखर्वं मुखिवस्य कडं यथवार
यथेतोत्र सर्वलोकवस्य भवतिः सप्त वरं यथे
तोत्र सर्वसो भाग्यदायकम् । अष्ट वारं यथेतो
त्र मिष्टानं कामाथसिद्धिदम् । नव वारं यथेतोत्र
तद्व्यभोग्यदायकम् । दश वारं यथेतोत्र त्रैलो
की जानदायकम् । एकादश वारं यथेतोत्र सर्व
सिद्धि लभेन्नर ॥ कवचस्मरने नैव भद्रा वलसमा
पितमहनमान कवचे न जोयति चिंतिय न पुनः
मनसा चिंतितं कार्यं सिद्धि भवति निश्चितम् । इ
व्यसुदर्शनसहितायां श्रीरामचन्द्रसितामनो ह
रयं च मुखिहनुमंतकवचसमायुधं भः स्वसि
द्धि शार्क ॥ ३८ ॥ अथ वानप्रकारेण पुरस्चरणम्
यते ॥ कुलादिद्विलतामोनौ लिखित्वा मंत्रमेव च
॥ प्रपूज्यते त्रसंस्कारं कृत्वा तस्यैव निवेदिष्य ॥ किंचि
जप्यामनुनीत्या देव्याभावेन तत्परः ताविसृज्य
नमस्कृत्य स्वयं जप्या सुसंयतः ॥ ततः ताभ्यो व
लिंदला मंत्रसिद्धिर्न संशयः ॥ अथ वानप्र० ॥
गुरुमानीय संस्थाप्य देवतापूजमेप्रिये ॥ वस्त्रा
लंकारहेमाद्यैः संतोष्य गुरुमेव च ॥ तत्सुतं तत्सु
ताद्यैव तत्पत्नीं परमेश्वरिणं ॥ पूजयित्वा मनुज
प्यास्ययं सिद्धिभूरो भवेत् ॥ अथ वानप्र० ॥ स
हास्त्रारगुप्तैः पादेष्वंघ्र्यात्वा पुपूज्य च ॥ केव
लं देवभावेन न जप्या सिद्धिभूरो भवेत् ॥ गुरवे द
क्षिणां दद्यात् अथाविमवमा मनः ॥ गुरोरनु

नामान्नेण दुष्टमंत्रोपि सिद्धति ॥ गुह्यं किं च्य ए
स्तेषु नाधिकारः सुरैरपि ॥ एषां च मंत्रयंत्राणां
प्रयोगः क्रियते यदि ॥ गुह्यं किं विना देवि संधि
हानि प्रजायते ॥ एतत्तन्त्रं च मंत्रं च शिष्येभ्योपि
न दर्शयेत् ॥ अन्यथा पुत्रराजस्य भवनं याति नि
श्चितं ॥ ॥ इति कालीतन्त्रे परमरहस्ये पुरश्चरण
विधिः सप्तमः पटलः ॥ ॥



